भगवत् कृपा

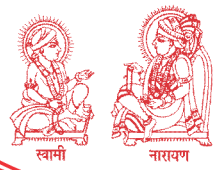

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करनेवाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष-17, अंक-10 सोमवार, 26.10. 94	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी अक्टूबर, 1994	वार्षिक चन्दा-50.00 प्रति अंक : 5.00

ब्रह्मप्रवाह दीपावली विशेषांक

आज तो गन्ने का बिचवा हिस्सा मिला है। ब्र.स्व. गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और गुरुहरि योगीजी महाराज की केवल करूणा से हम सब परमपद व परमकल्याण को पा गए हैं। परन्तु मूल प्रकृति या स्वभाव को लेकर गुणातीत स्वरूप का आंनद व अनुभव जैसा मिलना चाहिए वैसा इसी जीवन में ले नहीं पाते। किसी प्रकार का अव्यक्त देहभाव और जीवभाव बाधारूप बन जाता है। बड़े भगवदी के साथ की सच्ची प्रीति, विश्वास या महिमायुक्त सेवा से जीवन जीते देखकर गुरुहरि उसका देहभाव-जीवभाव दूर करके पल-पल आश्चर्यों की परम्परा का अनुभव कराएंगें- प्रतीति कराएगें। यूं दुर्लभ से दुर्लभ ऐसा एकांतिकभाव, सत्संग व भगवान मिले, इससे भी अधिक-साधुता तथा ब्रह्मभाव से वर्तने की आदत सहज बने ऐसा जोग फिलहाल गुरुहरि ने भगवदीयों का प्रसंग कराकर दे दिया है। तो सभी में ऐसी ज्ञानदृष्टि उदय होकर अधूरापन और कल्पना टले व माया से तनिक भी हारे बिना अखंड अक्षरधाम का ही सुख लेते हो जाए यही नूतन वर्ष की प्रार्थना.....

प.पू.काकाजी महाराज

संवत-2024

शुभ दीवाली..... अखंड दीवाली

दीवाली का मंगल पर्व आ रहा है.....दीवाली पर लोग घर की सफाई इत्यादि करते हैं, रोगन करवाते हैं। दीवाली के दिनों दीप जलाकर प्रकाश करते हैं। यूं अपने मन को संतुष्टि देकर आंनद मनाते है, लेकिन बाह्य प्रकाश तो अंतःकरण को कभी भी सुख, शांति, आंनद नहीं दे सकता। और..... सच्चे प्रकाश सच्चे आनंद का तो किसी को ख्याल ही नहीं। जीवन की हर क्षण भीतर में सच्चा प्रकाश यानि-भगवत्स्वरूप संत को आगे रखकर निर्भय, निश्चिंत, आनंदित, मेरा-तेरा की भावना से ऊपर, महिमा से भरा हुआ जीवन ! प्रभु का भरोसा रखकर जीने वाला स्वयं को धन्य-धन्य मानता हुआ व्यक्ति सच्चा प्रकाश-सच्चा आनंद भीतर में अनुभव कर सकेगा। सही अर्थ में सच्ची शांति व आनंद भगवान रखे सच्चे संत द्वारा ही संभव है.....पत्तों को चाहे कितना भी पानी देते रहो, उससे थोड़ी देर के लिए वे साफ सुथरे दिखाई पड़ेंगे पर जड़ को यदि पानी नहीं देंगे तो आखिर वह पेड़ सुख जाएगा। ठीक उसी प्रकार जीवमात्र को सच्चे निःस्वार्थ प्रेम की जो भूख है उसकी केवल भगवान रखे सच्चे संत द्वारा ही तृप्ति हो सकती है।

हम सब तो खूब भाग्यशाली हैं कि बिना कोई साधन किए पारस से पारस करने वाले संत मिल गए। और ..... आज तो सुवर्ण अवसर है कि वे गुणातीत स्वरूप हमें पूर्ण बनाने गरजु बने है। जीवों के अनेक जन्मों के अंधकार को दूर करने स्वभाव के बंधनों से मुक्त करने अपना निजी संबंध देकर लाड लड़ाते-लड़ाते मोक्ष कराने वाले ऐसे संत कलयुग में कहाँ मिलेंगे?

प्रभु को धरती पर मानवस्वरूप में प्रगट मानकर जीने वाले एक नूतन समाज का पू. काकाजी सर्जन कर गये। धरती पर गुणातीत स्वरूपों को राजी करने अद्‌भुत सुरुचि से जीवन जीता गुणातीत समाज-अक्षरधाम का समाज धरती पर अस्तित्व को पाया। परन्तु अभी हमें देशकाल स्पर्श कर जाता है..... हाँ बाहरी देशकाल-जैसे धन इत्यादि परिवार के सुख-दुःख फिर भी हमें अधिक परेशान नहीं करते पर भीतरी देशकाल-जैसे मुक्तों में प्रभु को नहीं देख पाते, एक-दूसरे में रसबस नहीं हो पाते..... अपने दोष का स्वीकार नहीं कर पाते, सामने वाले के सूचन को नहीं मान पाते....हठ, मान, ईष्या के शिकंजे में आ जाते हैं, वृत्ति के अधीन जीकर भगवत्स्वरूप संत व मुक्तों से अलगाव हो जाता है.... अपनी मान्यताएँ, सत्य, खोखला अहम आदि पकड़े रखा जाता है.... गुरू के वचन में अविश्वास-यह गलत-यह सही, फलां ऐसा-फलां वैसा, ऐसा क्यों? ऐसा क्यों नहीं? वगैरा ये सब भीतर के देशकाल के लक्षण हैं जो हमें ऐसे समर्थ संतों के संग में निरंतर रहने के बावजूद भी परेशान करते रहते हैं।

हम यदि गुणातीत स्वरूपों को सच में मानते हैं तो हमारा जीवन जगत के लोगों से अलग होना चाहिए। हम प्रभु के संबंध से जीते हैं वह कैसे पता चले? तो-समग्र गुणातीत समाज में आत्मीयता से ओतप्रोत होकर, सुह्यदभाव से जीए, जरा भी अंतराय रखे बिना एक दूसरे को दिल की आत्मीयता से और मिठास से सूचन कर सकें..... एक-दूसरे का सूचन प्रभु का दर्शन करके मानें.....इसमें हकदावा, मान, स्वभाव, बड़प्पन आदि आड़े ना आने दें। एक-दूसरे की गलत टीका-चर्चा नहीं करें..... चालाकियाँ नहीं करे..... इस गुणातीत समाज में अंतराय कपट रखे बिना संतों, हरिभक्तों- एक दूसरों के नजदीक आएं। सभी मुक्तों मेरे ही हैं। परिवार में आत्मबुद्धि, प्रीति रखने हमें कहां किसी को सिखाना पड़ता है? आधी रात को नींद में भी सहज यह आभास रहा करता है कि यह मेरा बेटा, मेरा काम.... वैसी आत्मबुद्धि, प्रीति से यदि सत्संग में हर एक जीने का प्रयास करे तो हर रोज दीवाली..... एक दूसरे के सहारे हंसते-खेलते, सुख-दुःख आपस में मिलजुल कर बांटते हुए दौड़े इसका नाम धरती पर अक्षरधाम!

लेकिन सत्संग में आने के बाद भी हमारे व्यवहारिक लौकिक, अलौकिक और यहां तक कि आध्यात्मिक मूल्यांकन हमारे ढंग के मुताबिक रहते हैं। अनुभव होने के बाद भी हमें भीतर में एक संशय

रहा करता है। इसलिए ही प्रगट प्रभु को तत्त्व से मानस्वरूप में वे जैसे हैं वैसे पहचान कर मन का राज्य छोड़कर सदगुरु राज्य में प्रवेश होने तैयार ही नहीं होते। तो अब, अर्जुन की तरह जीवन के कुरूक्षेत्र का अंत लाने के लिए दीवाली के शुभ दिन अतिदृढ़ संकल्प करके यदि हर रोज प्रयाश्चितरूप प्रार्थना किया करें कि हमारा जीवन संसारप्रधान या जगतप्रधान नहीं, परन्तु संतप्रधान ही रहे, संत की ही कृपा से प्रज्ञाचक्षु खुल जायें...

करोड़ों साधन करने के बावजूद भी जिन पुरूषों का योग न मिल सके- वही हमें आज गुणातीत स्वरूपों के रूप में मिल गए हैं....'सच्चा प्रकाश' का अनुभव कराने उन्होंने हमारे जीवन में स्थान लिया है। जैसे सोने का धागा छः ऋतुओं में सरीखा ही रहता है, वैसा ही सत्संग करना है। कितने भी ज्वार-भाटे, उतार-चढ़ाव, हर्ष-शोक के प्रसंग आए, पर हमारे भीतर की स्थिरता-हमारी निष्ठा, श्रद्धा, सुहृदभाव, सुरूचि रखकर सत्पुरूष के प्रति वफादार रहें यही एकमात्र हमारे प्रभु प.पू. काकाजी की चाहना थी..... प्राप्ति की मस्ती में रहकर, मिलजुल कर आनंद-किल्लोल करेंगे, अखंड इनके चरित्रों व महिमायुक्त विचारों में खोये रहकर जीवन बिताएगें, भजन करते-करते हर एक क्रिया करेंगे तो वर्ष के तीन सौ पैंसठ दिन की प्रत्येक सैकण्ड दीवाली का ही आनंद प्राप्त कर सकेंगे और वही संत का दृढ़ आसरा, उनके वचन में विश्वास माना जायेगा और..... प्रभु कैसे भी संजोगों में रखें तब भी प्रभु की सत्ता को स्वीकार करके राजी रहें- उसका नाम गुणातीत का सेवक ! सो सही अर्थ में सेवक बनकर दिल की सच्चाई से निष्ठा व श्रद्धा के दीप प्रगटायें.....

✡✡✡✡✡

अनिर्देश की गतिविधियाँ.....

प.भ. मल्कानी साहब के आग्रहवश पू. गुरुजी ने 7 अक्तु. से 9 अक्तु. तक दो दिन करीब दौ सौ मुक्तों के साथ स्वामिनारायण फार्म पर एक छोटे शिविर का आयोजन रखा। शिविर का नाम प.पू काकाजी द्वारा दिया प्रासादिक व अपने आप अत्यधिक गहराई लिए हुए था-**सचेतन-मौन शिविर।** पू. गुरुजी ने इसका रहस्यमय अर्थ बताया कि शिविर में किसी को भी बाहरी कोई ग्राम्यवार्ता तो करनी ही नहीं- पर इससे भी अधिक आपस में सत्संग की ग्राम्यवार्ता भी कि फलां ऐसा -फलां वैसा, इतना ठीक इतना ठीक नहां, ऐसा क्यों?ये सब बातें-चर्चाएँ भी ना करके अंतःकरण की वृत्तियाँ प्रभु में रखनी है और आपस में भी केवल महिमा की बातें, भजन, कथावार्ता की जुगालीरूप बातें ही करनी हैं। इससे फायदा यह होगा कि एक consciousness बदल जायेगी। मन को अखंडप्रभु में रखने वृत्तियाँ प्रभु के सम्मुख रहती हो जायेंगी।

7 की शाम को 8.30 बजे तक में पू. गुरुजी व सभी मुक्तों फार्म पर पहुँचे। पू. मल्कानी साहब व परिवार भक्तों का माहात्म्य समझ कर अत्यधिक सेवकभाव से जो सेवा करता है उससे तो सारा गुणातीत समाज परिचित है ही। पू. गुरुजी ने सबको बहनों द्वारा सुहृद्भाव से बनाए गोलगप्पे व पाँवभाजी का भोजन कराया..... फिर रात को नवरात्रे के दिनों के कारण ठाकुरजी की मूर्तियों के सामने हरिभक्तों ने भक्ति भाव से गरबे करके आनंद किया....

8 की सुबह फार्म के 'प.पू. काकाजी महाराज प्रार्थना भवन' में शिविर की उद्घाटन ज्योति पू. मल्कानी साहब के वरद् हस्तों द्वारा प्रज्जवलित हुई। पू. गुरुजी ने शिविर के प्रारम्भ में बातें करते हुए बताया कि तीन चीजों के कारण सत्संग में हमारी प्रगति नहीं हो पाती-

1. हमें संत के प्रति, उनकी बातों में छुपा नास्तिकभाव है।

2. हम दूसरों की झंझट कि-यह ऐसा करता है यह ठीक नहीं करता ऐसी बातों में रहते हैं। इसलिए हमारे सत्संग में-महिमा में बरकत नहीं आती।

3. हम भूल जाते है कि- मनमानी या स्वयं के तरीके से और बाह्यदृष्टि से करी हुई सेवा हमारे मान का बल बढ़ाती है और संत के वचन से संत की तरफ नजर रखकर करी हुई सेवा हमारा आंतरिक बल

बढ़ाती है, जो अतःकरण के शत्रुओं के साथ लड़ने का बल देती है।

प्रातः सभा के बाद स्वामिनारायण मंत्र का भजन करते-करते पूरे स्वामिनारायण फार्म की फेरी लगाई.....सब को खूब आनंद आया.....

दोपहर को दूसरी सभा में सुबह की बात के संदर्भ में वच लोया-10 से पू.गुरुजी ने समझाया कि ऐसे बड़े संत जो भी बात कहें वह बिना दिमाग लगाये लग पड़ो क्योंकि वह हमेशा हमारी गुंजाइश में ही कहते हैं और हमारे हित के लिए ही करते हैं। फिर वच लोया-12 का समझाया कि चाहे कैसा भी कामी, क्रोधी, लम्फट, लोभी हो पर यदि वह साधु की बातों में विश्वास करे.... साधु से लगाव रखे तो ना टलने वाले दोष भी जड़ से निकल जाएँ..

अब की बार पू. गुरूजी ने शिविर की तीन सभाओं में एक ही बात बार-बार खूब बल देकर समझाई कि बड़े पुरूष और अतिशय बड़े पुरूष इन दोनों में अंतर है... अतिशय बड़े पुरूष की रहम नजर से स्वभाव के बीज जल जाते हैं। बस उनकी ओर निगाह रखकर उनकी मर्जी के मुताबिक उन्हें राजी करने लगे रहे तो अतिशय बड़े पुरूष की रहम नजर हम पर पड़ती है। अपने साधनों से हम वृत्तियों पर काबू जरूर कर पायेंगे, पर जड़ से स्वभाव निर्मूल कर देने-वह तो असली गुणातीत साधु की कृपा से ही हो सकता है। पू. गुरूजी के बाद कुछ भक्तों ने भी अपने अपने दिल के उद्‌गार बताये... और पू. गुरूजी के पास प्रार्थना करी कि पू. काकाजी हम से जो कराना चाहते हैं वह जल्द ही कर पायें...

दोपहर की सभा के बाद सब ने खेलकूद कर आनंद किया..... शाम को फिर सभा का आयोजन था। भजन आदि के बाद पू. गुरूजी ने वच. ग.प्र. 76 खूब विस्तार से समझाया। महाराज ने जो यह करिश्मा करा हुआ है कि करोड़ों साल की तपस्या के बाद भी जो स्वभाव व काम, क्रोधादि टल नहीं पाये, वे गुणातीत संत की रहम नज़र से सहज ही टल जायें.....क्रोध और ईर्ष्या की जड़ मान है। रात की सभा के बाद प्रसाद लेकर फिर सभी ने भक्तिभाव से गरबे किए.....

9 की सुबह पहले स्वामिनारायण मंत्र का भजन करते-करते फार्म की फेरी लगाई। फिर वहीं बीच में प.पू. पप्पाजी के प्रसादी स्थल पर बैठ कर सभी ने भजन गाकर आनंद किया। प्रसादी स्थल से वापिस आकर नाश्ता करके सभी सभा के लिए एकत्रित हुए। सभा में भक्तों ने अपने दिल के उद्‌गार कहे। पू. गुरूजी ने वच.ग.प्र. 76 के संदर्भ में ही बात करते हुए बात करी कि **हमें कई बार बाहर सब upset दिखाई पड़ता है-पर सही अर्थ में हमारे भीतर के तंत्र को setup करने के लिए प्रभु ने ही बाहर का तंत्र upset रखा हुआ होता है। जैसे-जैसे हम भीतर से ठीक होने लगेंगे वैसे-वैसे बाहर का तंत्र भी ठीक नज़र आता जाएगा।** वच. ग.म. 7 का जिकर करते हुऐ बात करी- **मनमानी सेवाभक्ति अच्छी लगती है,पर वह अच्छी है नहीं। वह ego बढ़ायेगी और इस कारण हमारी तरक्की नहीं हो पाती।**

दोपहर की सभा के बाद सभी ने प्रसाद लिया फिर games इत्यादि खेले। भाईयों ने पू. गुरूजी के साथ swimming करी। यूं आनंद किल्लोल करने के बाद शाम की सभा का आयोजन हुआ। पहले कुछ भक्तों व संतों ने अपने-अपने अनुभव बताये व पू.भाईस्वामी ने अच्छा मार्गदर्शन किया। पू. गुरुजी ने शिविर का निचोड़ रूप रहस्य बताया कि **जब तक valuations है तब तक हमारी जीवदशा टलेगी नहीं। सो जीवदशा में टिकना ही नहीं-सबंध से अखंड ब्रह्मभाव में रहना है** और.... पू.मल्कानी साहब को धन्यवाद दिया! शिविर दौरान पू. मल्कानी साहब व परिवार ने मुक्तों की सुविधा का जो ध्यान रखा था-उस बारे का प.भ.मक्खनलालजी ने एक वाक्य में निचोड़ दिया कि- Nothing better than this anyone can expect! दूसरी ओर पू. मल्कानी साहब ने पू.गुरुजी को धन्यवाद देते हुए आग्रह किया कि- **आप अब जल्दी-जल्दी 2-3 महीने के अतंर पर ऐसे शिविर का आयोजन किया करो।** सभा समाप्त होने के बाद सभी ने प्रसाद लिया और रात 10.00 बजे सभी अनिर्देश के लिए रवाना हुए। यूं आनंद की स्मृतियाँ लेकर सभी 'सचेतन-मौन' शिविर से जागृत हो गए.....

✡✡✡✡✡

स्वामी की बातें

383. स्वयं की बात करी कि संवत् 1859 की साल में हमने भादो के महिने में पहली बार महाराज के दर्शन करे तब महाराज ने हमारे सामने देखा और हमने महाराज के दर्शन करे इतने में ही निश्चय हो गया- प्रतीति आ गई!

प्र-5,157

384. उपासना और आज्ञा दोनों रखना। उपासना व ध्यान में-'निश्चय' और आज्ञा में-'ब्रह्मरूप' मानना। इससे मूल अज्ञान जो कारण देह है, उसका नाश होता है और ऐसा तो सत्युग में भी कोई नहीं कर पाये।

प्र-5,159

385. हरिशंकरभाई ने पूछा कि ज्ञान से निर्लेप रह पाते हैं या विषय न भोगने से निर्लेप रह पाते हैं? तब बोले ज्ञान से निर्लेप रह सकते हैं परन्तु मन इन्द्रिय व देह-ये तीनों प्रकार से पतिव्रता भाव चूक जाता है। इनमें से दो प्रकार से तो हमसे पले ऐसे नहीं है। सो देह से पालना तो तीनों प्रकार से हमने पाल लिया।

प्र-5,160

386. जिसे कुछ चाहिए ही नहीं उसे दुःख नहीं आता और भले ही चाहिए परन्तु निर्मानी रहे तो भी दुःख नहीं आए। संशय व भोलापन-ये दो कारणों से दुःख आता है।

प्र-5,161

387. आज्ञा में रहे वह भले ही दूर रहा हो, फिर भी मेरे करीब है और आज्ञा में नहीं रहता हो वह पास में होगा तो भी दूर है। चाहे कैसा ही ज्ञानी होगा, प्रीति से जुड़ा होगा या बड़ा होगा, परन्तु आज्ञा का उल्लंघन करे तो सत्संग में नहीं रह पाएगा। यहां दृष्टांत दिया कि उड़ाने से पतंग दूर चली जाती है लेकिन डोरी हाथ में है तो वह पास ही है। ऐसे ही आज्ञारूपी डोरी हाथ में है तो वह महाराज के पास ही है।

प्र-5,162

388. मनजीभाई ने पूछा कि—भगवान के दर्शन हो वह अधिक है या ज्ञान द्वारा स्थिति करनी अधिक है। तब कहा कि दर्शन की अपेक्षा ज्ञान द्वारा स्थिति करनी अधिक है। इस पर पर्वतभाई, कृपानंदस्वामी वग़ैरे जो ज्ञान की स्थिति को पाये थे उनकी बात करी कि उन्हें समाधि नहीं होती थी और दर्शन भी नहीं हुआ तथा पर्वतभाई फिलहाल हम जैसा समझते हैं, वैसा समझते थे। सो स्वयं को ब्रह्मरूप मानना और मेरे भीतर भगवान विराजमान हैं ही यूं मानना, वह ज्ञान की स्थिति है और वह अधिक है। इसमें विघ्न नहीं है। सच्चिदानंदस्वामी वग़ैरा समाधि से मूर्ति देखते जरूर थे, परन्तु उन्हें भी दुःख आया वह बात करी। सो स्वयं की समझ, कृपानंदस्वामी की तरह छिपाये रखनी व प्रेम का आवेग नहीं रखना चाहिए।

प्र-5,164

389. ऐसी बातें और कहीं नहीं होती। विषय खोटे हो रहे हैं और वासना जैसी दिखाई देती है वह तो देह धारा है सो होगी.....

प्र-5,165

390. धर्म सत्संग में रखता है और वैराग्य से जगत नाशवंत है यह दिखाई पड़ता है। फलस्वरूप जगत में बंधते नहीं और ज्ञान—'आत्मनिष्ठा' से देह के सुख-दुःख परेशान नहीं कर जाते, लेकिन मोक्ष तो उपासना से ही होता है।

प्र-5,166

391. अंतःकरण शेखचिल्ली के मनसूबे जैसा नहीं रखना। सिर्फ एक भगवानरूपी खम्बा दृढ़ रखना, पर कई आधार नहीं रखना। कल्याण के लिए आसरा व प्रीति दो ही है। आज्ञा तथा नियम पालता है वही आत्मनिष्ठ है पर जो नियम नहीं पालता उसे आत्मनिष्ठ नहीं जानना।

प्र-5,167

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 31.10.94 सोमवार – एकादशी, व्रत

(2) दि. 1.11.94 मंगलवार– धनतेरस

(3) दि. 3.11.94 गुरुवार – दीपावली, लक्ष्मी-शारदा पूजन

(4) दि. 4.11.94 शुक्रवार – अन्नकूटोत्सव, नूतनवर्ष प्रारम्भ
(नवनिर्मित मंदिर में स्थापित अक्षरपुरुषोत्तम महाराज व गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियों के समक्ष वार्षिक महाभोग लगाकर आरती करेंगे)

(5) दि. 5.11.94 शनिवार – भैयादूज

(6) दि. 7.11.94 सोमवार – लाभपंचमी

(7) दि. 13.11.94 रविवार – प्रबोधनी एकादशी, व्रत

(8) दि. 18.11.94 शुक्रवार – कार्तिकी पूर्णिमा

आत्मीय महोत्सव.....

जीवन का परम सौभाग्य एवं सुनहरी घड़ी कि प्र.ब्र.स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी महाराज की हीरक जयंती साक्षात् गुणातीत स्वरूपों प.पू. पप्पाजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. दिनकर भाई, प.पू. हरिभाई साहेब की निश्रा में 'हरिधाम' सोखड़ा–गुजरात में दि. 29 दिसम्बर' 94 से 1 जनवरी' 95 तक समग्र गुणातीत समाज भव्यता से मनायेगा..... आईए, इस शुभ अवसर पर हम सभी 'हरिधाम' जाकर दर्शन, सेवा, समागम का अद्‌भुत लाभ व आशीर्वाद प्राप्त करें.....

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY
A 103, Ashok vihar-III, Swaminarayan Marg, Kakaji Lane, Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7249327
Printed at **R.P. Printers,** Shahdara, Delhi-110 032